

● सुनो और गाओ :

१२. दोहे

परिचय : कबीर, रहीम, तुलसीदास और बिहारी ये मध्यकालीन कवि हैं। इनके द्वारा लिखे 'दोहे' हिंदी के अमूल्य अक्षरधन हैं। प्रस्तुत दोहे नीति मूल्यों पर आधारित हैं।

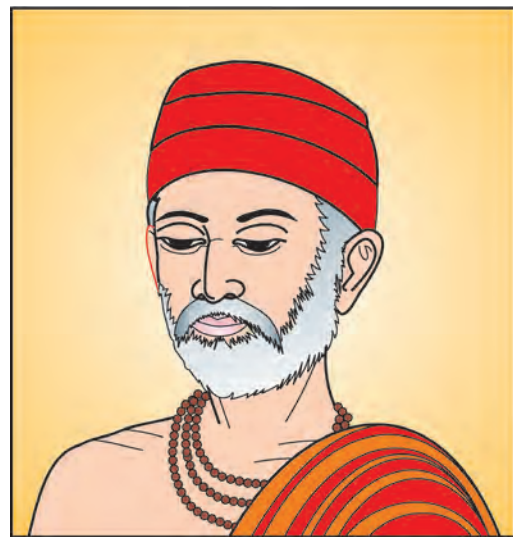


स्वयं अध्ययन

सुवाच्य, सुडौल अक्षरों में दोहों की वाक्य पट्टियाँ बनाओ।

कबीर

काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में परलै होइगी, बहुरि करैगा कब ॥१॥
कथनी मीठी खाँड़-सी, करनी विष की लोय ।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय ॥२॥



रहीम

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे, सोई साँचे मीत ॥१॥
रहिमन विद्याबुद्धि नहीं, नहीं धरम जस दान ।
भू पर जनम वृथा धरै, पसु बिनु पूँछ समान ॥२॥

❑ विद्यार्थियों से दोहों का मौन एवं मुखर वाचन कराएँ। दोहा रचना से परिचय कराएँ। दोहों का सरल अर्थ बताएँ। विद्यार्थियों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से दोहों का भावार्थ समझाएँ। उनसे दोहों की गेय प्रस्तुति कराएँ।

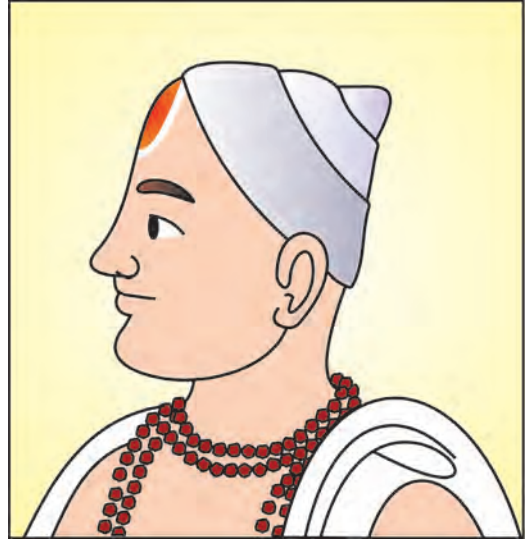
सदैव ध्यान में रखो



सदाचरण अच्छे चरित्र का निर्माण करता है ।

तुलसीदास

मुखिया मुख-सौ चाहिए, खान पान को एक ।
पालै, पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ॥१॥
तुलसी या संसार में, भाँति-भाँति के लोग ।
सबसे हँस-मिल बोलिए, नदी नाव संजोग ॥२॥



बिहारी

बढ़त बढ़त संपत्ति-सलिलु, मन सरोज बढ़ि जाइ ।
घटत-घटत पुनि ना घटै, बरु समूल कुम्हिलाइ ॥
संगति सुमति न पाबही, परे कुमति के धंध ।
राखौ मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ॥



मैंने समझा



शब्द वाटिका

नए शब्द

काल्ह = कल

परलै = प्रलय

बहुरि = फिर

लोय = आग की लपट

बिपति = संकट

साँचे = सच्चे

मीत = दोस्त

सलिलु = पानी

सरोज = कमल

बरु = बल्कि

समूल = जड़ से

पाबही = प्राप्त होता है



अध्ययन कौशल



किसी एक दोहे के अर्थ को चित्र द्वारा स्पष्ट करो और समझाओ ।

खोजबीन



‘भारत रत्न पुरस्कार’ प्राप्त किन्हीं दो व्यक्तियों की जानकारी ढूँढो ।



सुनो तो जरा

अन्य दोहों को सस्वर सुनो और सुनाओ ।



वाचन जगत से

किसी अन्य कवि के दोहों को पढ़ो ।



बताओ तो सही

कौन-कौन-से गुण तुम्हें आदर्श विद्यार्थी का स्थान दिला सकते हैं ? सोचो और बताओ ।



मेरी कलम से

बालपत्रिका में आने वाली कविताओं को संकलित कर हस्तपुस्तिका तैयार करो ।

* उचित जोड़ियाँ मिलाओ

‘अ’

१. कथनी तजि करनी करै
२. सबसे हँस मिल बोल बोलिए
३. पसु बिनु पूँछ समान
४. संगति सुमति न पाबहि

‘ब’

- रहीम
- कबीर
- बिहारी
- तुलसीदास



जरा सोचो तो ... बताओ

यदि समय जानने का यंत्र (घड़ी) न होता तो



विचार मंथन



॥ गागर में सागर भरना ॥



भाषा की ओर

पत्ते पर दिए गए प्रत्यय से शब्द तैयार करो और लिखो ।

